○ 27 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ○
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *याद के बल से विकारों की कट उतारी ?*

➢➢ *कमल फूल समान बनकर रहे ?*

➢➢ *शिक्षक बनने के साथ रहमदिल की भावना रही ?*

➢➢ *झोली परमात्म दुआओं से भरपूर रही ?*

____

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता हैं इसलिए वृत्ति में जरा भी किचड़ा न हो, तब प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा और वायुमण्डल बनेगा इसलिए *हर एक की विशेषताओं को देखो और अपनी वृत्ति को सदा शुभ रखो। इसके लिए याद रखो कि 'दुआ देना है और दुआ लेना है' कोई भी निगेटिव बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

 ✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

 ✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

 ✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं महावीर आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी अपने को महावीर अनुभव करते हो? *महावीर अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान। जो महावीर आत्मा है उसके लिए सर्व शक्तियां सदा सहयोगी हैं। ऐसे नहीं कि कोई शक्ति सहयोगी हो और कोई शक्ति समय पर धोखा देने वाली हो! हर शक्ति आर्डर पर चलने वाली हो।* जिस समय जो शक्ति चाहिए वो सहयोगी बनती है या टाइम निकल जाता है, पीछे शक्ति काम करती है? आर्डर किया और हुआ। ये सोचना वा कहना न पड़े कि-करना नहीं चाहिए था लेकिन कर लिया, बोलना नहीं चाहिए लेकिन बोल लिया। इससे सिद्ध है कि शक्ति समय पर सहयोगी नहीं होती। सुनना नहीं चाहिए लेकिन सुन लिया, तो कान कर्मेन्द्रिय अपने वश में नहीं हुई ना! अगर सुनने नहीं चाहते और सुन लिया-तो कान ने धोखा दे दिया।

〰✧ अपनी कर्मेन्द्रियां अगर समय पर धोखा दे दें तो उसको राजा कैसे कहेंगे! राजयोगी का अर्थ ही है हर कर्मेन्द्रिय ऑर्डर पर चले। जो चाहे, जब चाहे, जैसा चाहिए-सर्व कर्मेन्द्रियां वैसा ही करें। *महावीर कभी भी यह बहाना नहीं बना सकता कि समय ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी। नहीं। समस्या का काम है आना और महावीर का काम है समस्या का समाधान करना, न कि हार खाना।* तो अपने आपको परीक्षा के समय चेक करो। ऐसे नहीं-परीक्षा तो

आई नहीं, मैं ठीक हूँ! पास तो पेपर के टाइम होना पड़ता है! या पेपर हुआ ही नहीं और मैं पास हो गया?

〰✧ तो सदा निर्भय होकर विजयी बनना। कहना नहीं है, करना है! छोटी-मोटी बात में कमजोर नहीं होना है। जो महावीर विजयी आत्मा होते हैं वो सदा हर कदम में तन से, मन से खुश रहते हैं। उदास नहीं रहते, चिंता में नहीं आते। सदा खुश और बेफिक्र होंगे। *महावीर आत्मा के पास दु:ख की लहर स्वप्न में भी नहीं आ सकती। क्योंकि सुख के सागर के बच्चे बन गये। तो कहाँ सुख का सागर और कहाँ दु:ख की लहर! स्वप्न भी परिवर्तन हो जाते हैं।* नया जन्म हुआ तो स्वप्न भी नये आयेंगे ना! संकल्प भी नये, जीवन भी नई। जब बाप के बन गये तो जैसा बाप वैसे बच्चे।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

───────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ आवाज से परे रहने वाला बाप, आवाज की दुनिया में आवाज द्वारा सर्व को आवाज से परे ले जाते हैं। बापदादा का आना होता ही है साथ ले जाने के लिए तो सभी साथ जाने के लिए एवररेडी हो वा अभी तक तैयार होने के लिए समय चाहिए? *साथ जाने के लिए बिन्दु बनना पडे। और बिन्दु बनने के लिए सर्व प्रकार के बिखरे हुए विस्तार अर्थात अनेक शाखाओं के वृक्ष को बीज में समाकर बीजरूप स्थिति अर्थात बिन्द में सबको समाना पडे।*

~✧ लौकिक रीति में भी जब बडे विस्तार का हिसाब करते हो तो सारे हिसाब को समाप्त कर लास्ट में क्या कहते? कहा जाता है - 'कहो शिव अर्थात बिन्दी।' ऐसे सृष्टि चक्र वा कल्प वृक्ष के अन्दर आदि से अंत तक कितने हिसाब-किताब के विस्तार में आये? *अपने हिसाब-किताब की शाखाओं अथवा विस्तार रूपी वृक्ष को जानते हो ना?*

~✧ देह के हिसाब की शाखा, देह के सम्बन्धों के शाखायें, देह के भिन्न-भिन्न पदार्थों में बन्धनी आत्मा बनने की शाखा, भक्तिमार्ग और गुरुओं के बंधनों के विस्तार की शाखायें, भिन्न-भिन्न प्रकार के विकर्मों के बंधनों की शाखायें, कर्मभोग की शाखायें, कितना विस्तार हो गया। अब इन *सारे विस्तार को बिन्दु रूप बन बिन्दी लगा रहे हो?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

~✧ *पूजा की विधि में बूंद-बूंद का महत्व है।* इस समय आप बच्चे 'बिन्दू' के रहस्य में स्थित होते हो। विशेष सारे ज्ञान का सार एक बिन्दू शब्द में समाया हुआ है। बाप भी बिन्दू, आप आत्मायें भी बिन्दू और ड्रामा का ज्ञान धारण करने के लिए जो हुआ - फिनिश अर्थात् फुलस्टाप। बिन्दू लगा दिया। *परम आत्मा, आत्मा और यह प्रकृति का खेल अर्थात ड्रामा तीनों का ज्ञान

प्रैक्टिकल लाइफ में 'बिन्दू' ही अनुभव करते हो ना।* इसलिए भक्ति में भी प्रतिभा के बीच बिन्दू का महत्व है। *दूसरा है - बूंद का महत्व- आप सभी याद में बैठते हो या किसी को भी याद में बिठाते हो तो किस विधि से कराते हो? संकल्पों की बूंदों द्वारा - मैं आत्मा हूँ, यह बूंद डाली। बाप का बच्चा हूँ - यह दूसरी बूंद। ऐसे शुद्ध संकल्प की बूंद द्वारा मिलन की सिद्धि को अनुभव करते हो ना।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- आसुरी अवगुण निकाल, 21 जनमो का स्वराज्य लेना"*

➳ _ ➳ मै आत्मा भृकुटि सिहांसन पर विराजमान हूँ... मुझसे चारो ओर दिव्य प्रकाश फैल रहा है.. अपने प्रकाशित स्वरूप को देख रही हूँ और फ़रिश्ता बनकर सूक्ष्म लोक में मीठी ब्रह्मा माँ के पास पहुंचती हूँ... *मीठी माँ मुझे स्नेह से अपनी ममतामयी गोद में आलिंगन करती है.*.. और शिव पिता भी आतुर से हसीन नजारा देखने आये है... शिव पिता को देख... मै आत्मा उनके गले मै झूम जाती हूँ... प्यारे बाबा अपने वरदानी हाथो को सिर पर रख... आशीर्वादों की वर्षा कर रहे है...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को विजय तिलक से आलोकित करते हुए बोले :- * "मीठे प्यारे फल बच्चे... मै पिता बच्चों को माया के बन्धनों से मुक्त कराकर

21 जनमो का स्वराज्य देने आया हूँ... इसलिए गुणो और शक्तियो के सागर पिता से सारे खजाने लेकर... *स्वयं को ईश्वरीय गुणो से लबालब कर, सुखो के अधिकारी बनो.*.. यादो की अग्नि में सारे विकारो को भस्म करो...."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के वरदानी महावाक्य सुनकर कह रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... आपकी यादो में खोकर में आत्मा सदा ही मौज में हूँ... दिव्य गुणो से सजधज कर देवताओ की धरती पर कदम रख रही हूँ... *आपकी यादो में अपनी दैहिक विकृतियों को खत्म कर पवित्रता की किरणों से भर गयी हूँ..*."

❉ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को अतुल धन दौलत का मालिक बनाते हुए बोले ;-* " मीठे लाडले बच्चे... रूहानी फूल बनकर गुणो की खशबू से महकने वाले गुलाब बनो... *अपने विकारो के काँटों को योग अग्नि में जलाकर निर्मल पवित्र बनो.*.. और पवित्रता के सौंदर्य पर मीठे बाबा को मोहित कर स्वर्ग का अधिकार प्राप्त करो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने खोये वजूद को मीठे बाबा से पाकर निहाल हो गयी और बोली :-* "सच्चे साथी बाबा... *मेरे सुखो की चिंता स्वयं भगवान कर रहा है, यह कितना महान भाग्य है.*.. अपनी गोद में बिठाकर फूलो सा खिलाना... और स्वर्ग की जमी को मेरे नाम लिखना... यह ईश्वर पिता ही मेरे लिए कर सकता है कोई मनुष्य नही..."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को सुखो के नजारे दिखाते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... यह धरती, आसमाँ सुखो से सजे, आप बच्चों के लिए ही है... बस श्रीमत का हाथ पकड़ देह के भान... और *विकारो के दलदल से बाहर निकल जाओ.*.. सारे अवगुण खत्म कर... स्वर्ग की बादशाही पर अपना हक जमाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने भाग्य की जादूगरी पर मुस्करा कर मीठे बाबा से कहती हूँ ;-* "प्यारे लाडले बाबा मेरे... दैहिक रिश्तो और देहभान ने मुझे विकारी और काला कर दिया... *आपने अपनी पसन्द बनाकर मझे गोरा और

उजला कर दिया है.*.. आपके प्यार की शीतलता में, मै आत्मा पुनः निखर उठी हूँ और दिव्यता में मुस्करा रही हूँ..." यूँ अपनी भावनाओ का हार... मीठे बाबा के गले में डाल, मै आत्मा सृस्टि रंगमंच पर आ गयी...

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- याद के बल से विकारों की कट उतारनी है*"

➳ _ ➳ जैसे सूर्य की ज्वलन्त किरणे हर प्रकार के किचड़े को जला कर भस्म कर देती है ऐसे *ज्ञानसूर्य अपने शिव पिता के साथ योग लगाकर उनकी शक्तिशाली किरणो से अपने ऊपर चढ़े विकारों के किचड़े को समाप्त करने के लिए मैं आत्मा सर्वशक्तिवान, ज्ञान सूर्य अपने शिव पिता के पास उनके धाम पहुँचती हूँ* और उनकी सर्वशक्तियों की ज्वालास्वरूप किरणों की योगअग्नि में अपने 63 जन्मो के विकर्मों को दग्ध करने के लिए उनके बिल्कुल समीप जा कर बैठ जाती हूँ।

➳ _ ➳ निरसंकल्प स्थिति में स्थित होकर, शक्तियों के सागर अपने शिव पिता की सर्वशक्तियों की एक - एक किरण को निहारते हुए मैं स्पष्ट महसूस करती हूँ कि हर किरण में से बहुत तेज अग्नि निकल रही है। *इस अग्नि की तपन को मैं आत्मा स्पष्ट महसूस कर रही हूँ और इस तपन के प्रभाव से अपने रूप को परिवर्तित होते हुए देख रही हूँ*। विकारों की अग्नि में जलने के कारण मेरा स्वरूप जो आयरन जैसा हो गया था वो अब इस योग की अग्नि में निखर कर कुंदन जैसा बन रहा है।

➳ _ ➳ ज्ञान सूर्य बाबा से आ रही इन सर्वशक्तियों का स्वरूप प्रतिपल बदल रहा है और इनकी तीव्रता भी बढ़ती जा रही है। *ऐसा लग रहा है जैसे शक्तियों का एक चक्र मेरे चारों और निर्मित हो गया है जिसमे से अग्नि की लपटें निकल रही हैं और इन लपटों की तेज गर्माहट से मुझ आत्मा द्वारा किये

हुए विकर्मों की मैल पिघल रही है*। मेरे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार इस योग अग्नि में जल कर भस्म हो रहें हैं। जैसे - जैसे विकारों की कट उतर रही है वैसे - वैसे मैं आत्मा लाइट होती जा रही हूँ। *मेरी चमक बढ़ती जा रही हैं। सच्चे सोने के समान मैं एक दम शुद्ध और प्योर होती जा रही हूँ*।

➾ _ ➾ देह भान में आने और अपने निज स्वरूप की विस्मृति के कारण मुझ आत्मा में निहित वो सर्व गुण और सर्व शक्तियाँ जो मर्ज हो गए थे वो मेरे शिव पिता के सहयोग से पुनः जागृत हो रहें हैं। *अपने खोये हुए सातों गुणों और अष्ट शक्तियों को पुनः प्राप्त कर मैं स्वयं को गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप अनुभव कर रही हूँ*। अपने सतोगुण और शक्तिसम्पन्न स्वरूप को पुनः प्राप्त कर मैं आत्मा अब ईश्वरीय सेवा अर्थ वापिस साकार लोक की और प्रस्थान करती हूँ। *साकार सृष्टि रूपी कर्मभूमि पर आकर अपने साकार तन में मैं आत्मा प्रवेश करती हूँ और भृकुटि पर विराजमान हो कर अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ*।

➾ _ ➾ अपने ब्राह्मण स्वरूप में रहते अब मैं सदैव इस बात को स्मृति में रखती हूँ कि मेरा यह ब्राह्मण जन्म ईश्वरीय देन है। *खुद ईश्वर बाप ने ईश्वरीय सेवा अर्थ मुझे यह अनमोल संगमयुगी ब्राह्मण जन्म गिफ्ट किया है*। इसलिए मेरे इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य और कर्तव्य सर्विसएबुल बन विश्व की सर्व आत्माओ का कल्याण करना है। *अपने इस कर्तव्य को पूरा करने और सर्विसएबुल बनने के लिए अब मैं स्वयं पर पूरा अटेंशन देते हुए इस बात का पूरा ध्यान रखती हूँ कि मनसा, वाचा, कर्मणा मुझ से ऐसा कोई कर्म ना हो जो विकर्म बनें*।

➾ _ ➾ विकारों का अंशमात्र भी मुझ आत्मा में ना रहे इसके लिए योगबल से आत्मा को तपाकर विकारों को भस्म करने का पुरुषार्थ मैं निरन्तर कर रही हूँ। *पुराने विकारी स्वभाव संस्कारों को योग अग्नि में जलाकर भस्म करने के साथ - साथ नये दैवी संस्कारो को अपने जीवन में धारण कर, सर्विसएबुल बन अपने संकल्प, बोल और कर्म से अब मैं सबको आप समान बनाने की सेवा कर रही हूँ*।

——————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं शिक्षक बनने के साथ रहमदिल की भावना द्वारा क्षमा करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर मर्सीफ़ूल आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव अपनी झोली परमात्म दुआओं से भरपूर रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा माया को दूर से ही भगा देती हूँ ।*
✺ *मैं शिवशक्ति हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ ➳ *सर्वंश त्यागी सदा अपने को हर श्रेष्ठ कार्य के - सेवा की सफलता

के कार्य में, ब्राह्मण आत्माओं की उन्नति के कार्य में, कमज़ोरी वा व्यर्थ वातावरण को बदलने के कार्य में जिम्मेवार आत्मा समझेंगे।* सेवा में विघ्न बनने के कारण वा सम्बन्ध सम्पर्क में कोई भी नम्बरवार आत्माओं के कारण जरा भी हलचल होती है, तो *सर्वन्श त्यागी बेहद के आधारमूर्त समझ, चारों ओर की हलचल को अचल बनाने की जिम्मेवारी समझेंगे।* ऐसे बेहद की उन्नति के आधार मूर्त सदा स्वयं को अनुभव करेंगे। ऐसा नहीं कि यह तो इस स्थान की बात है या इस बहन वा भाई की बात है। नहीं। 'मेरा परिवार है'। मैं कल्याणकारी निमित्त आत्मा हूँ। टाइटल विश्व-कल्याणकारी का मिला हुआ हैं न कि सिर्फ स्व-कल्याणकारी वा अपने सेन्टर के कल्याणकारी। दूसरे की कमज़ोरी अर्थात् अपने परिवार की कमज़ोरी है, ऐसे बेहद के निमित्त आत्मा समझेंगे। मैं-पन नहीं, निमित्त मात्र हैं अर्थात् विश्व-कल्याण के आधारमूर्त बेहद के कार्य के आधारमूर्त हैं। *सर्वंश त्यागी सदा एकरस, एक मत, एक ही परिवार का एक ही कार्य है - सदा ऐसे एक ही स्मृति में नम्बर एक आत्मा होंगे।*

✺ *"ड्रिल :- विश्व कल्याणकारी अवस्था का अनुभव करना।"*

➳ _ ➳ भक्ति मार्ग की मैं भक्त आत्मा... अपनी ही उलझन में उलझी... अपने ही दुःखों में डूबी... *अपनी ही विपरीत परिस्थितिओं को सुलझाने में खुद ही उलझ पड़ती मैं आत्मा... न अपना उद्धार कर पा रही थी और न ही औरों का...* भगवान को दर दर ढूंढती मैं आत्मा... सोचती थी मैं भगवान की पक्की भक्त फिर भी भगवान आ नहीं रहे हैं तो समस्त विश्व में मेरे जैसे कितने दुःखी... अशांत आत्मायें हैं जो भगवान को पुकार रहे हैं... *क्या भगवान को सुनाई नहीं दे रहा हैं... समस्त लोक के दुःखी... अशांत... आत्माओं की पुकार...* एक ही संकल्प मन में मुझ भक्त आत्मा में चलता रहता था कि मैं इन समस्त आत्माओं के लियें कुछ भी नहीं कर पा रही हूँ... बस देखती... सुनती रहती हूँ... और *मन ही मन भगवान को पुकारती रहती हूँ... अब तो आ जाओ...* और कितना पाप का घड़ा भरना बाक़ी हैं... अब तो अत्याचार की पराकाष्ठा हो गईं भगवान... अब तो आ जाओ...

➳ _ ➳ और मैं भक्त आत्मा... भगवान को खोजती पहुँच जाती हूँ ब्रह्माकुमारी के सेंटर पर... *जहाँ सच्चा गीता ज्ञान मिला... मैं कौन... मेरा

कौन... भगवान कौन की पहचान मिली...* और मन की आँखे खुल गई जब भगवान के अवतरण को प्रत्यक्ष महसूस किया... भगवान मेरे पिता शिवबाबा हैं... उनकी शक्तियों और प्यार की मैं हक़दार बच्ची हूँ... *यही वह संगमयुग हैं जब भगवान स्वयं अपना धाम छोड़ कर इस पतित दुनिया में आते हैं... अपने भक्तों को भक्ति का फल देने... अपने बच्चों को वर्सा देने आते हैं...* अपने बच्चों को अपनी ही शक्तियों से अवगत कराने आते हैं... अपने ही संस्कारों से परिपूर्ण कराने आते हैं... और मैं आत्मा बापदादा की शक्तियों की अधिकारी बन गई... अपने आप में सर्व शक्तियों से भरपूर हो गई... खुद के ही दुःखों की जंजीरों में बंधी मैं आत्मा... *बापदादा के प्यार भरी मुरली रूपी शिक्षाओं से दुःखों से मुक्त हो गई...*

➼ _ ➼ और मैं आत्मा हद के बंधनों से निकल कर पहुँच जाती हूँ बेहद के त्यागी... तपस्वी जीवन में... *मैं आत्मा सदा स्वयं को बेहद की उन्नति की आधार मूर्त अनुभव करती हूँ...* समस्त ब्रह्माण्ड मेरा परिवार है... और सभी आत्माओं की मैं पूर्वज... विश्व-कल्याणकारी आत्मा हूँ... दाता की बच्ची मैं दातापन के संस्कारों को अपने में उजागर करती हूँ... *मेरेपन की त्यागी मैं आत्मा बापदादा की लाडली बच्ची बन समस्त ब्रह्माण्ड में बापदादा के शांति रूपी किरणों को फैलाने में संगमयुग के क्षणों को व्यतीत करती जा रही हूँ...* दैवीय संस्कारों का आह्वान कर... सभी आत्माओं की मनोकामनाएं पूर्ण करती जा रही हूँ...

➼ _ ➼ *हर पल बापदादा से बातें करती... बापदादा को साथ साथ महसूस करती... बापदादा के संग संग चलती मैं आत्मा... प्रत्यक्ष बापदादा को अनुभव करती रहती हूँ...* उनके आशीर्वादों रूपी शक्तियों को अपने में धारण कर समस्त ब्रह्माण्ड में फैलाती जा रही हूँ... बापदादा के साथ साथ सभी अशांत... दुःखी... आत्माओं को शांति... पवित्रता के वाइब्रेशन से भरपूर करती जा रही हूँ... बापदादा के साथ फ़रिश्ता ड्रैस में सज मैं आत्मा... पूरे ब्रह्माण्ड में लाइट माइट हाउस बन शक्तियों रूपी लाइट से प्रकाशित करती जा रही हूँ... *विश्व-कल्याणकारी के स्टेज पर विराजमान मैं आत्मा... चारों ओर की हलचल को अचल बनाने की जिम्मेवारी बापदादा के साथ साथ निभाती जा रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔